सुचना :- यह सीखने का दूसरा स्तर है। निरीक्षण समाग्री जो उपयोगी आकार में होती है, सुचना में जो शामिल होता है नही बताता है। कौन, क्या, कहाँ, किसके आदि।

ज्ञान प्राप्त करना :- ज्ञान या जानकारी प्राप्त करना तीसरे सीखने के स्तर केन्द्र है इसमे शामिल होता है। जो विवरण या निर्देशों के रूप मे शामिल हो।

बोध :- यह चौथा सीखने का स्तर है। यह बोध से ताल्लुक रखता है। बोध स्तर का हैं 'क्या' के प्रश्नों के हल को जो कि व्याख्यान से होता है।

प्रज्ञान :- यह अन्तिम और पाँचवा सीखने का स्तर है। प्रज्ञान मूल्यांकन करने की योग्यता है। इसमे मूल्य शामिल होता है। सिखाने के आवश्यक है। प्राप्त ज्ञान, बोध, प्रज्ञान सभी सामने आ जाता है।

सीखना :-

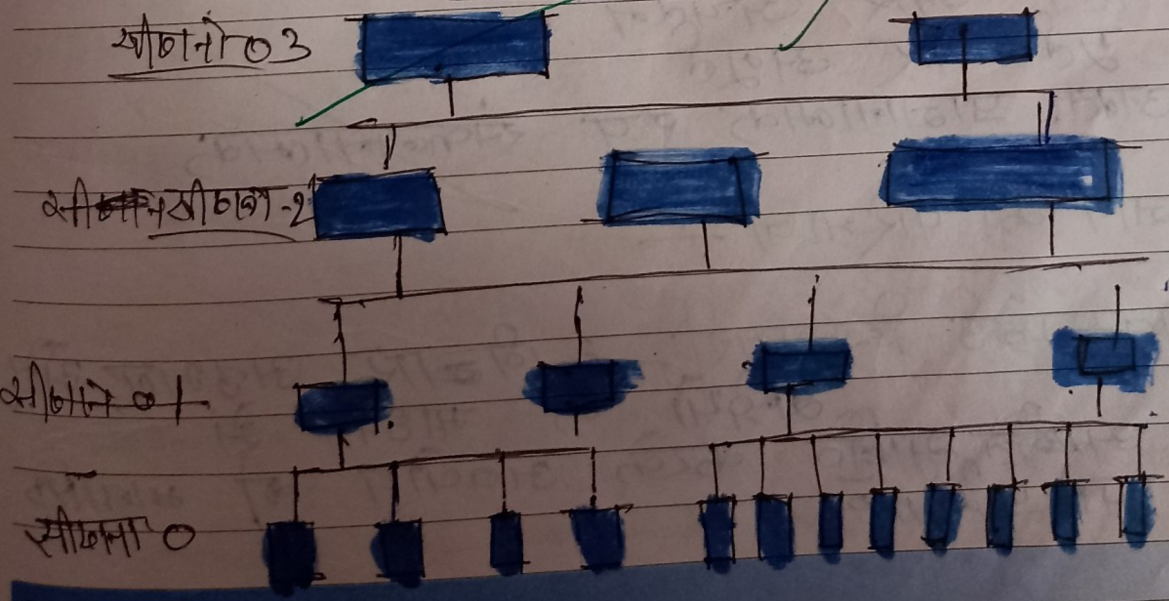

अधिगम की सामाजिक - सांस्कृतिक व संज्ञानात्मक प्रक्रिया

Notes

संज्ञान का अर्थ तथा अधिगम की

भूमिका — मनोवैज्ञानिक अवधारणा के अनुसार वह मानसिक प्रक्रिया है। जिसके द्वारा ज्ञानार्जन होता है। जिसमें ज्ञान जानकारी, प्रत्यक्षीकरण, अन्तः प्रज्ञा और तर्क सम्मिलित होते है।

संज्ञान कॉगनीशन शब्द की उत्पत्ति लैटिन भाषा के कॉगनोशीयर (cognoscere) शब्द से हुई है। जिसका अर्थ है "जानना या ज्ञान" यह शब्द पन्द्रहवीं शताब्दी से ही प्रयोग किया जाने लगा इस संज्ञान प्रक्रिया को ध्यान मे रखते हुए एक महान दार्शनिक अरस्तु ने संज्ञानात्मक क्षेत्र को ध्यान देने लगे।

संज्ञान ~~क्षेत्रों में~~ शब्द का प्रयोग विभिन्न क्षेत्रों में किया गया है।

जैसे- अवधान, स्मृति और कार्य स्मृति, निर्णय और मूल्यांकन, समस्या समाधान का निर्माण अवबोध या भाषा निर्माण आदि।

1- चेतन और अचेतन
2. मूर्त और अमूर्त
अन्तः प्रज्ञानात्मक एवं संकल्पनात्मक

संज्ञान की परिभाषा :-

1- आक्सफोर्ड डिक्शनरी :- विचार अनुभव और इन्द्रियों के माध्यम से ज्ञान अर्जित आर्जित करके अवबोध की मानसिक क्रियाएं या प्रक्रियाएं

DATE

~~वाइगोत्स्की~~
वाइगोत्स्की का सिद्धान्त - संज्ञानात्मक विकास की व्याख्या करें।

सिद्धान्तो मे वाइगोत्स्की (1896-1934) मे सामाजिक सांस्कृतिक दृष्टिकोण एक प्रतिष्ठित सिद्धान्त माना गया है। इसके ~~दृष्टिकोण~~ दृष्टिकोण से प्रभावित होकर अनेका नेक कार्यकर्ता ने बच्चो मे संज्ञानात्मक ~~विकास~~ विकास को समझने तथा स्पष्ट करने का प्रयास किया जाता है। वाइगोत्स्की ने 1920-1930 के बीच काफी शोध कार्य किया इसी अवधी में पियाजे का सिद्धान्त भी ~~उ~~ आ रहा था ~~दु~~ दुर्भाग्य से इस ~~रूसी~~ रूसी विकासात्मक वैज्ञानिक की 38 वर्ष के उम्र मे मृत्यु हो गयी फिर उसका विचार आज शोध शोध के लिए प्रेरणा परक बन गया

वाइगोत्स्की के सामाजिक विकास का सिद्धात
~~रूस~~ रूस के मनोवैज्ञानिक
" बालक के हर प्रकार के विकास मे उनके समाज का विशेष योगदान रहा समाज मे अंत: क्रिया के फल स्वरूप से ही उसे विभिन्न प्रकार की विकास होता है।
वाइगोत्स्की के अनुसार प्रारम्भिक बाल्यावस्था मे बालक अपने कार्यो के नियोजन एवं समस्या समाधान मे भाषा का औजार की तरह ~~है~~ उपयोग करने मे लग जाते है।

संभावित विकास के क्षेत्र :-
i :- संज्ञानात्मक विकास सामाजिक - सांस्कृतिक परिवेश मे घटित होता है। तथा उसे प्रभावित भी होता है।
ii :- बच्चो मे ~~अधिकांस~~ अधिकांश महत्वपूर्ण संज्ञानात्मक कौशल का विकास माता-पिता

शिक्षक तथा अन्य लोगों के साथ अन्तःक्रिया पर निर्भर करता है।

बाबूगोत्स्की के सिद्धान्त के प्रमुख सम्प्रत्यय
बाबूगोत्स्की के संज्ञानात्मक विकास की व्याख्या हेतु चार परस्पर सम्बन्धित अन्तःक्रियात्मक स्तर का उल्लेख किया गया है।

1- सूक्ष्म स्तरीय विकास
2. व्यक्तित्व स्तरीय विकास
3. जाति ~~स्तरी~~ स्तरीय विकास
4 सामाजिक इतिहासिक विकास

~~सूक्ष्म~~

(2) व्यक्तिस्तरीय ~~सूक्ष्मस्तरीय~~ विकास:- व्यक्ति की पूरी जीवन अवधि में जो विकासात्मक परिवर्तन प्रदर्शित होता है, उसे व्यक्तिस्तरीय विकास कहा जाता है।
विकास को समझने के लिए जीवन पर्यन्त होने वाली परिवर्तनो का अध्ययन तथा विश्लेषण पर बल देता है। ताकि विकास के बारे ठोस निष्कर्ष निकल सके

(1) सूक्ष्म स्तरीय विकास — संज्ञानात्मक विकास की अवधि में यह लघुकालीक अवधि है। जिसके बच्चे किसी समस्या के समाधान में अपने विचार, उपागम या रसी तकनीक को बदलते रहते है।

(3) जाति ~~स्तरी~~ स्तरीय विकास विकास के अध्ययन का यह उपागम जिसमे विकासात्मक परिवर्तन को मापन तथा विश्लेषण विकास वादी दृष्टिकोण मे किया जाता है।

(4) सामाजिक - ऐतिहासिक विकास - इस दृष्टिकोण का आशय है, हमे व्यक्ति के संज्ञानात्मक विकास को समझने के लिए उनकी संस्कृति मूल्यमापन, तकनीकी परिवर्तनों में बदलाव को ध्यान मे रखना है।

जीन पियाजे का संज्ञानात्मक विकास का सिद्धान्त

Notes

जीन पियाजे द्वारा संज्ञानात्मक विकास सिद्धान्त का प्रतिपादन सन 1952 में किया गया पियाजे के सिद्धान्त की अवस्था सिद्धान्तों की श्रेणी में आता है। पियाजे के सिद्धान्त के फलस्वरुप मनोवैज्ञानिकों का ध्यान ध्यान विकास की अवस्थाओं की ओर तथा संज्ञान की ओर आकर्षित करता है।
पियाजे का संज्ञान का अर्थ को स्पष्ट करते हुए कहा कि
" संज्ञान व्यक्ति की क्रिया पर आधारित ज्ञान है। इसमें व्यक्ति वातावरण के साथ सक्रिय रूप से ज्ञान अर्जित करता है।

संज्ञानात्मक विकास की क्रमिक अवस्थाएँ

पियाजे ने संज्ञानात्मक विकास की ~~अवस्था~~ व्याख्या करके लिए संज्ञानात्मक विकास को चार अवस्थाओं में विभक्त किया गया है।

1- संवेदी-पेशीय अवस्था - जन्म से - 2 वर्ष तक
2. प्राक् संक्रियात्मक अवस्था - 2 से 7 वर्ष तक
3. स्थूल (ठोस) संक्रियात्मक अवस्था - 7 से 12 वर्ष तक
4. औपचारिक संक्रियात्मक अवस्था - 12 से वयस्कावस्था तक

1. संवेदी-पेशीय अवस्था - यह अवस्था जन्म से 2 वर्ष तक चलती है।
इस अवस्था में शिशुओं का संज्ञानात्मक विकास 6 उप अवस्थाओं से होकर गुजरती है।